Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language,
Online ISSN 2348-3083, SJ IMPACT FACTOR 2017: 5.068, www.srjis.com
PEER REVIEWED JOURNAL, FEB – MAR, 2019, VOL- 7/32

महिलाओं की सामाजिक क्रियाकलापों के प्रतिमानों के प्रति अवधारणा का विश्लेषणात्मक अध्ययन

तारा सिंह गिल[1], Ph. D. & संदीप कौर[2]

[1]प्राचार्य, बी. आर. चौधरी महाविद्यालय, गोलुवाला, हनुमानगढ़

[2]शोध अध्येता, टांटिया विश्वविद्यालय, श्री गंगानगर

Emil: jitenderrainyal@gmail.com

Abstract

समाज की प्रगति और शिक्षा की उन्नति परस्पर आश्रित है। शिक्षित समाज ही उत्थान की ओर बढ़ सकता है। समाज की एक महत्वपूर्ण इकाई परिवार है, जिसका मेरूदण्ड स्त्री है। उसका समाज पर प्रत्यक्ष व परोक्ष प्रभाव पड़ता है। सृष्टि के प्रारम्भ से लेकर अब तक पाषाणकाल से स्पूतनिक युग तक नारी, नर के जीवन का पोषण एवं उन्नयन करती रही है। तथा नारी अनन्त गुणों की आगार रही है। पृथ्वी जैसी क्षमता, सूर्य जैसा तेज, समुद्र के जैसी गम्भीरता, पुष्पों जैसा मोहक सौन्दर्य कोमलता और चन्द्रमा जैसी शीतलता, सहिष्णुता और प्रेम की पवित्र मूर्ति है। नारी का त्याग व बलिदान भारतीय संस्कृति की अमूल्य नीधि है। अतः इस शोध कार्य में महिलाओं की सामाजिक क्रियाकलापों के प्रतिमानों के प्रति अवधारणा का विश्लेषणात्मक अध्ययन किया गया है।

मुख्य शब्दः *महिला, सामाजिक क्रियाकलाप, अवधारणा, प्रतिमान।*

Scholarly Research Journal's is licensed Based on a work at www.srjis.com

प्रस्तावना :–

सृष्टि के प्रारम्भ से लेकर अब तक, पाषाणकाल से स्पूतनिक युग तक नारी, नर के जीवन का पोषण एवं उन्नयन करती रही हैं। आज तक अपनी ममता, वात्सल्य, त्याग, करूणा, कोमलता एवं मधुरता से पुरूष की कठोरता एवं रूक्षता को कम कर जीवन में एक स्निग्ध, अजस्त्र प्रेमधारा बहाने में अपूर्ण योग दिया हैं। यह सत्य हैं कि संघर्ष पुरूष की जीवन प्रेरणा शक्ति का प्रमाण रहा हैं, किन्तु विश्व का सामाजिक इतिहास बतलाता हैं कि पुरूष ने प्रगति पथ पर अग्रसर होने के लिए किसी न किसी अंश में माता, बहिन, पत्नी, प्रेयसी आदि से किसी न किसी प्रकार की प्रेरणा अवश्य प्राप्त ही हैं। आंचल में दुध और आँखों में पानी, लिये त्यागमयी नारी सामाजिक व्यवस्था का अनिवार्य अंग रही हैं और यह स्पष्ट हैं कि हमारी आदिमकालीन गृहस्थी का शिला न्यास नारी की कोमलता के कर–कमलों द्वारा ही हुआ होगा, पुरूष की कठोरता की क्रेन द्वारा नहीं। पुरूष जहाँ शौर्य का प्रतिरूप हैं, नारी वहाँ प्रेरणा की प्रतीक हैं। किसी भी मानव समाज में महिलाओं की भूमिका अत्यन्त महत्वपूर्ण होती हैं और कोई भी समाज इसे नजर अन्दाज नहीं कर सकता हैं। स्त्रियां राष्ट्र के विकास के लिए उतना ही महत्व रखती हैं।

शोध समस्या का औचित्य :–

क्रियाकलाप समस्त प्रकट एवं अप्रकट व्यवहार के संघटक होते हैं। चूंकि किसी व्यक्ति के क्रियाकलाप उसके वैयक्तिक जीवन का केन्द्रभूत तत्व होते हैं तथा उनके विचारों, भावनाओं और

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

व्यवहारों को निर्धारित करने में उनकी बहुत अहम भूमिका होती है। इसलिए यदि हमें सामाजिक परिवर्तन का या समाज किस दशा में आगे बढ़ रहा हैं इस बात का अध्ययन करना हैं तो व्यक्ति समूहों के क्रियाकलापों का और इससे भी अधिक क्रियाकलापों में हो रहे परिवर्तनों का परिचय प्राप्त करना परमावश्यक हैं। इन परिवर्तनों का महिलाओं पर भी प्रभाव पड़ता हैं क्योंकि महिलायें समाज का एक महत्वपूर्ण हिस्सा हैं। अतः सामाजिक क्रियाकलापों के प्रति महिलाओं की अवधारणा ज्ञात करना परमावश्यक हैं। चूंकि अन्य क्षेत्रों में महिलाओं के दृष्टिकोण पर कुछ शोध कार्य हुए हैं। लेकिन सामाजिक क्षेत्र में महिलाओं पर शोध कार्य बहुत ही कम हुआ हैं। अतः अनुसंधित्सु को महिलाओं का सामाजिक क्रियाकलापों के प्रतिमानों के प्रति अवधारणा का अध्ययन करने की आवश्यकता महसुस हुई।

समस्या कथन :–

प्रस्तुत अनुसंधान की समस्या का शीर्षक निम्नलिखित हैं– ''महिलाओं की सामाजिक क्रियाकलापों के प्रतिमानों के प्रति अवधारणा का विश्लेषणात्मक अध्ययन'' हैं।

शोध के उद्देश्य :–

प्रस्तुत शोध के निम्नलिखित उद्देश्य निर्धारित किये गये हैं–

1. साक्षर एवं असाक्षर महिलाओं का सामाजिक क्रियाकलापों के प्रतिमानों के प्रति अवधारणा का विश्लेषणात्मक अध्ययन करना।
2. साक्षर एवं असाक्षर महिलाओं का पारिवारिक दृष्टिकोण के प्रति अवधारणा का तुलनात्मक अध्ययन करना।
3. साक्षर एवं असाक्षर महिलाओं का सामाजिक कुरीतियों के प्रति अवधारणा का तुलनात्मक अध्ययन करना।
4. साक्षर एवं असाक्षर महिलाओं का स्त्री शिक्षा के प्रति अवधारणा का तुलनात्मक अध्ययन करना।
5. साक्षर एवं असाक्षर महिलाओं का सामाजिक परिवर्तन के प्रति अवधारणा का तुलनात्मक अध्ययन करना।
6. साक्षर एवं असाक्षर महिलाओं का धार्मिक एवं नैतिक दृष्टिकोण के प्रति अवधारणा का तुलनात्मक करना।
7. साक्षर एवं असाक्षर महिलाओं का आर्थिक दृष्टिकोण के प्रति अवधारणा का तुलनात्मक अध्ययन करना।
8. साक्षर एवं असाक्षर महिलाओं का राजनैतिक दृष्टिकोण के प्रति अवधारणा का तुलनात्मक अध्ययन करना।
9. शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र की महिलाओं का सामाजिक क्रियाकलापों के प्रतिमानों के प्रति अवधारणा का तुलनात्मक अध्ययन करना।

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

10. शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र की महिलाओं का पारिवारिक दृष्टिकोण के प्रति अवधारणा का तुलनात्मक अध्ययन करना।
11. शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र की महिलाओं का सामाजिक कुरीतियों के प्रति अवधारणा का तुलनात्मक अध्ययन करना।
12. शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र की महिलाओं का स्त्री शिक्षा के प्रति अवधारणा का तुलनात्मक अध्ययन करना।
13. शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र की महिलाओं का सामाजिक परिवर्तन के प्रति अवधारणा का तुलनात्मक अध्ययन करना।
14. शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र की महिलाओं का धार्मिक एवं नैतिक दृष्टिकोण के प्रति अवधारणा का तुलनात्मक अध्ययन करना।
15. शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र की महिलाओं का आर्थिक दृष्टिकोण के प्रति अवधारणा का तुलनात्मक अध्ययन करना।
16. शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र की महिलाओं का राजनैतिक दृष्टिकोण के प्रति अवधारणा का तुलनात्मक अध्ययन करना।

परिकल्पना :–

इस शोध कार्य की परिकल्पनायें निम्नलिखित हैं–

1. साक्षर एवं असाक्षर महिलाओं का सामाजिक क्रियाकलापों के प्रतिमानों के प्रति अवधारणा में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता हैं।
2. साक्षर एवं असाक्षर महिलाओं का पारिवारिक दृष्टिकोण के प्रति अवधारणा में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता हैं।
3. साक्षर एवं असाक्षर महिलाओं का सामाजिक कुरीतियों के प्रति अवधारणा में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता हैं।
4. साक्षर एवं असाक्षर महिलाओं का स्त्री शिक्षा के प्रति अवधारणा में सार्थक अन्तर पाया जाता हैं।
5. साक्षर एवं असाक्षर महिलाओं का सामाजिक परिवर्तन के प्रति अवधारणा में सार्थक अन्तर पाया जाता हैं।
6. साक्षर एवं असाक्षर महिलाओं का धार्मिक एवं नैतिक दृष्टिकोण के प्रति अवधारणा में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता हैं।
7. साक्षर एवं असाक्षर महिलाओं का आर्थिक दृष्टिकोण के प्रति अवधारणा में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता हैं।

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

8. साक्षर एवं असाक्षर महिलाओं का राजनैतिक दृष्टिकोण के प्रति अवधारणा में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता हैं।
9. शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्रों की महिलाओं का सामाजिक क्रियाकलापों के प्रतिमानों के प्रति अवधारणा में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता हैं।
10. शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्रों की महिलाओं का पारिवारिक दृष्टिकोण के प्रति अवधारणा में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता हैं।
11. शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्रों की महिलाओं का सामाजिक कुरीतियों के प्रति अवधारणा में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता हैं।
12. शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्रों की महिलाओं का स्त्री शिक्षा के प्रति अवधारणा में सार्थक अन्तर पाया जाता हैं।
13. शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्रों की महिलाओं का सामाजिक परिवर्तन के प्रति अवधारणा में सार्थक अन्तर पाया जाता हैं।
14. शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्रों की महिलाओं का धार्मिक एवं नैतिक दृष्टिकोण के प्रति अवधारणा में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता हैं।
15. शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्रों की महिलाओं का आर्थिक दृष्टिकोण के प्रति अवधारणा में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता हैं।
16. शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्रों की महिलाओं का राजनैतिक दृष्टिकोण के प्रति अवधारणा में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता हैं।

शोध का न्यादर्श व सीमांकन :–

प्रस्तुत शोध में अनुसंधित्सु ने महिलाओं का सामाजिक क्रियाकलापों के प्रतिमानों के प्रति अवधारणा का विश्लेषणात्मक अध्ययन हेतु बीकानेर जिले की 100 महिलाओं का चयन यादृच्छिक विधि द्वारा किया। इसमें 50 साक्षर एवं 50 असाक्षर महिलाओं का चयन किया गया। अनुसंधित्सु ने समय, साधन एवं सुविधा को ध्यान में रखकर प्रस्तुत अध्ययन का निम्नानुसार सीमांकन किया हैं –

1. प्रस्तुत शोधकार्य को बीकानेर जिले तक सीमित रखा गया हैं।
2. प्रस्तुत शोधकार्य में न्यादर्श को 100 महिलाओं तक ही सीमित रखा गया हैं।
3. प्रस्तुत शोधकार्य में साक्षर एवं असाक्षर महिलाओं का चयन किया गया हैं।
4. प्रस्तुत शोधकार्य में शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र की महिलाओं का चयन किया गया हैं।
5. शोध परिणाम प्राप्ति में सांख्यिकी के अन्तर्गत मध्यमान, मानक विचलन एवं टी परीक्षण तक ही सीमित रखा गया हैं।

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

उपकरण :–

महिलाओं का सामाजिक क्रियाकलापों के प्रतिमानों के प्रति अवधारणा का विश्लेषणात्मक अध्ययन हेतु अनुसंधित्सु द्वारा स्वनिर्मित मापनी का उपयोग किया गया हैं। इस मापनी के मानकीकरण एवं उपकरण अथवा मापनी की विश्वसनीयता एवं वैद्यता की जाँच के पश्चात् प्राप्त अंतिम प्रारूप को स्वनिर्मित मानकीकृत मापनी कहा गया एवं इसका प्रशासन महिलाओं पर किया गया ।

शोध निष्कर्षः–

शोध कार्य के निष्कर्ष निम्नानुसार है–

1. साक्षर एवं असाक्षर महिलाओं का सामाजिक क्रियाकलापों के प्रतिमानों के प्रति अवधारणा का टी–मूल्य 31.51 प्राप्त हुआ। प्राप्त टी–मूल्य 0.05 स्तर पर सार्थक है अर्थात् महिलाओं पर शिक्षा का प्रभाव स्पष्ट रूप से परिलक्षित होता है। शोध से प्राप्त निष्कर्ष के आधार पर हम कह सकते है कि सामूहिक रूप से साक्षर एवं असाक्षर महिलाओं का सामाजिक क्रियाकलापों के प्रतिमानों के प्रति अवधारणा में सार्थक अन्तर पाया जाता है।

2. पारिवारिक दृष्टिकोण के प्रति साक्षर एवं असाक्षर महिलाओं के मध्य टी–मूल्य 2.28 प्राप्त हुआ। प्राप्त टी–मूल्य 0.05 स्तर पर सार्थक है अर्थात् साक्षर एवं असाक्षर महिलाओं में पारिवारिक दृष्टिकोण के प्रति अवधारणा में भी सार्थक अंतर पाया जाता हैं।

3. सामाजिक कुरीतियों के प्रति साक्षर एवं असाक्षर महिलाओं के मध्य टी–मूल्य 24.52 प्राप्त हुआ। प्राप्त टी–मूल्य 0.05 स्तर पर सार्थक है। शोध से प्राप्त निष्कर्ष के आधार पर हम कह सकते है कि सामाजिक कुरीतियों के प्रति साक्षर एवं असाक्षर महिलाओं की अवधारणा मे सार्थक अंतर पाया जाता हैं।

4. स्त्री शिक्षा के प्रति साक्षर एवं असाक्षर महिलाओं के मध्य टी–मूल्य 22.1 प्राप्त हुआ। यह टी–मूल्य 0.05 पर सार्थक है। शोध से प्राप्त निष्कर्ष के आधार पर हम कह सकते है कि साक्षर एवं असाक्षर महिलाओं में स्त्री शिक्षा के प्रति अवधारणा में सार्थक अंतर पाया जाता हैं।

5. सामाजिक परिवर्तन के प्रति साक्षर एवं असाक्षर महिलाओं के मध्य टी–मूल्य 23.5 प्राप्त हुआ। प्राप्त टी–मूल्य 0.05 स्तर पर सार्थक है शोध से प्राप्त निष्कर्ष के आधार पर हम कह सकते है कि साक्षर एवं असाक्षर महिलाओं में सामाजिक परिवर्तन के प्रति अवधारणा में सार्थक अंतर पाया जाता हैं।

6. धार्मिक एवं नैतिक दृष्टिकोण के प्रति साक्षर एवं असाक्षर महिलाओं के मध्य टी–मूल्य 0.15 प्राप्त हुआ। प्राप्त टी–मूल्य 0.05 स्तर पर सार्थक है। शोध से प्राप्त निष्कर्ष के आधार पर हम कह सकते है कि धार्मिक एवं नैतिक दृष्टिकोण के प्रति साक्षर एवं असाक्षर महिलाओं की अवधारणा में सार्थक अंतर नहीं पाया जाता हैं।

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

7. आर्थिक दृष्टिकोण के प्रति साक्षर एवं असाक्षर महिलाओं के मध्य टी–मूल्य 13.89 प्राप्त हुआ। प्राप्त टी–मूल्य 0.05 स्तर पर सार्थक है शोध से प्राप्त निष्कर्ष के आधार पर हम कह सकते है कि आर्थिक दृष्टिकोण के प्रति साक्षर एवं असाक्षर महिलाओं की अवधारणा में सार्थक अंतर नहीं पाया जाता हैं।

8. राजनैतिक दृष्टिकोण के प्रति साक्षर एवं असाक्षर महिलाओं के मध्य टी–मूल्य 22.09 प्राप्त हुआ। प्राप्त टी–मूल्य 0.05 स्तर पर सार्थक है। शोध से प्राप्त निष्कर्ष के आधार पर हम कह सकते है कि साक्षर एवं असाक्षर महिलाओं का राजनैतिक दृष्टिकोण के प्रति अवधारणा में सार्थक अंतर पाया जाता हैं।

9. शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र की महिलाओं का सामाजिक क्रियाकलापों के प्रतिमानों के प्रति अवधारणा का टी–मूल्य 1.33 प्राप्त हुआ। प्राप्त टी–मूल्य 0.05 स्तर पर सार्थक हैं।शोध से प्राप्त निष्कर्ष के आधार पर हम कह सकते है कि सामाजिक क्रियाकलापों के प्रतिमानों के प्रति शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र की महिलाओं की अवधारणा में सार्थक अंतर पाया जाता हैं ।

10. पारिवारिक दृष्टिकोण के प्रति शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र की महिलाओं के मध्य टी–मूल्य 0.36 प्राप्त हुआ। प्राप्त टी–मूल्य 0.05 स्तर पर असार्थक है। शोध से प्राप्त निष्कर्ष के आधार पर हम कह सकते है कि पारिवारिक दृष्टिकोण के प्रति शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र की महिलाओं की अवधारणा में सार्थक अंतर नहीं पाया जाता हैं।

11. शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र की महिलाओं का सामाजिक कुरीतियों के प्रति टी–मूल्य 2.34 प्राप्त हुआ। प्राप्त टी–मूल्य 0.05 स्तर पर सार्थक है। शोध से प्राप्त निष्कर्ष के आधार पर हम कह सकते है कि सामाजिक कुरीतियों के प्रति शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र की महिलाओं की अवधारणा में सार्थक अंतर पाया जाता हैं।

12. स्त्री शिक्षा के प्रति शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र की महिलाओं के मध्य टी–मूल्य 5.60 प्राप्त हुआ। प्राप्त टी–मूल्य 0.05 स्तर पर सार्थक है। शोध से प्राप्त निष्कर्ष के आधार पर हम कह सकते है कि स्त्री शिक्षा के प्रति शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र की महिलाओं की अवधारणा में सार्थक अंतर पाया जाता हैं।

13. सामाजिक परिवर्तन के प्रति शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र की महिलाओं के मध्य टी–मूल्य 1.02 प्राप्त हुआ। प्राप्त टी–मूल्य 0.05 स्तर पर असार्थक है। शोध से प्राप्त निष्कर्ष के आधार पर हम कह सकते है कि सामाजिक परिवर्तन के प्रति शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र की महिलाओं की अवधारणा में सार्थक अंतर नहीं पाया जाता है।

14. धार्मिक एवं नैतिक दृष्टिकोण के प्रति शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र की महिलाओं के मध्य टी–मूल्य 0. 42 प्राप्त हुआ। प्राप्त टी–मूल्य 0.05 स्तर पर असार्थक है। शोध से प्राप्त निष्कर्ष के आधार पर हम

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

कह सकते है कि धार्मिक एवं नैतिक दृष्टिकोण के प्रति शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र की महिलाओं की अवधारणा में सार्थक अंतर नहीं पाया जाता हैं।

15. आर्थिक दृष्टिकोण के प्रति शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र की महिलाओं के मध्य टी–मूल्य 0.83 प्राप्त हुआ। प्राप्त टी–मूल्य 0.05 स्तर पर असार्थक है। शोध से प्राप्त निष्कर्ष के आधार पर हम कह सकते है कि आर्थिक दृष्टिकोण के प्रति शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र की महिलाओं की अवधारणा में सार्थक अंतर नहीं पाया जाता हैं।

16. राजनैतिक दृष्टिकोण के प्रति शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र की महिलाओं के मध्य टी–मूल्य 0.31 प्राप्त हुआ। प्राप्त टी–मूल्य 0.05 स्तर पर असार्थक हैं। शोध से प्राप्त निष्कर्ष के आधार पर हम कह सकते है कि राजनैतिक दृष्टिकोण के प्रति शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र की महिलाओं की अवधारणा में सार्थक अंतर नहीं पाया जाता है।

उपर्युक्त निष्कर्षो के आधार पर ज्ञात हुआ कि महिलाओं का सामाजिक क्रियाकलापों के प्रतिमानों के प्रति अवधारणा पर शिक्षा का काफी प्रभाव पड़ता हैं। शहर एवं गाँव में स्त्री शिक्षा में अंतर होने के कारण उनके सामाजिक क्रियाकलापों में भी स्पष्ट अंतर दृष्टिगोचर होता हैं।

शोध की उपादेयता :–

यह शोध कार्य भी शैक्षिक दृष्टि से निम्न आधारों पर उपयोगी साबित हो सकेगा–

1. महिलाओं के लिये शोध की उपादेयता – इस शोध की उपयोगिता महिलाओं के लिये बहुत महत्वपूर्ण हैं। समाज में होने वाले प्रत्येक क्रियाकलाप का प्रभाव महिलाओं पर भी पड़ता हैं। अतः सामाजिक क्रियाकलापों के प्रतिमानों के प्रति महिलाओं की अवधारणा ज्ञात करना परमावश्यक हैं। शिक्षा एक ऐसा साधन है जिसका प्रभाव महिलाओं के सामाजिक क्रियाकलापों के प्रतिमानों के प्रति अवधारणा में दृष्टिगोचर होता हैं। शिक्षा द्वारा ही सामाजिक क्रियाकलापों की जानकारी महिलाओं को हो सकती है तथा महिलाएं सामाजिक क्रियाकलापों में भाग ले सकती हैं ।

2. समाजशास्त्रियों के लिये उपादेयता – प्रस्तुत शोध की उपयोगिता समाज के लिये बहुत महत्वपूर्ण हैं। समाजशास्त्री साक्षर एवं असाक्षर महिलाओं के सामाजिक क्रियाकलापों के प्रतिमानों के प्रति अवधारणा में भिन्नता नहीं मानते थे। लेकिन प्रस्तुत शोध से उनके सामने स्पष्ट हो गया है कि सामाजिक क्रियाकलापो के प्रतिमानों के प्रति अवधारणा में सार्थक अंतर पाया जाता है अर्थात सामाजिक क्रियाकलापों पर शिक्षा का प्रभाव पड़ता है।

3. शोधकर्ताओं के लिये – प्रस्तुत शोध में शोधकर्ताओं के लिये नये शोध क्षेत्रों को खोला है। इसके आधार पर विभिन्न वर्गवार महिलाओं का सामाजिक क्रियाकलापों के प्रतिमानों के प्रति अवधारणा में अन्तर किन–किन कारणों से हो सकता है, इस पर शोध कार्य उपयोगी हो सकता हैं।

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

भावी शोध हेतु सुझाव :–

शोध कार्य एक निरंतर चलने वाली प्रक्रिया है जो भविष्य में तीव्र गति से अग्रसर होगी। अतः भविष्य में इस संबंध में और भी अधिक अनुसंधान कार्य सम्पन्न किये जा सकते हैं। भविष्य में किए जाने वाले शोधों के संबंध में कुछ सुझाव निम्न प्रकार हैं–

1. इसी शोधकार्य को अपेक्षाकृत बड़े न्यादर्श पर किया जा सकता है।
2. आर्थिक एवं सामाजिक स्तर का समावेश करते हुए प्रस्तुत शोध को व्यापक बनाया जा सकता हैं।
3. प्रस्तुत शोधकार्य को विभिन्न व्यवसाय में कार्यरत महिलाओं पर प्रशासित किया जा सकता है।
4. ग्रामीण क्षेत्र की साक्षर एवं असाक्षर महिलाओं का सामाजिक क्रियाकलापों के प्रति अवधारणा का तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता है।
5. कामकाजी एवं गैर कामकाजी महिलाओं का सामाजिक क्रियाकलापों के प्रतिमानों के प्रति अवधारणा का तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता है।
6. विभिन्न वर्गवार (उच्चवर्गीय, मध्यमवर्गीय व निम्नवर्गीय) महिलाओं पर भी यह शोध कार्य किया जा सकता है।

सन्दर्भ साहित्य :–

ढ़ौढियाल सच्चिदानन्द एवं पाठक अरविन्द (1992), शैक्षिक अनुसंधान का विधि शास्त्र, जयपुर : राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी।

भारद्वाज, जे. एल. (2002), सांख्यिकी तकनीक, भोपालः मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी।

भार्गव, महेश (1995), आधुनिक मनोवैज्ञानिक परीक्षण एवं मापन, आगराः हरप्रसाद भार्गव प्रकाशक।

रायजादा, बी.एस. (1997), शिक्षा में अनुसंधान के आवश्यक तत्त्व, जयपुरः राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी।

सुखिया एम.पी. एवं मल्होत्रा, पी. वी. (1994), शैक्षिक अनुसन्धान के मूल तत्व, आगराः विनोद पुस्तक मन्दिर।

वाजपेयी, एस. आर. (1967), सामाजिक अनुसंधान तथा सर्वेक्षण, कानपुरः किताब घर।

जैन, दशरथ (1985), समाज एवं संस्कृति, भोपालः हिन्दी ग्रन्थ अकादमी।

आस्थाना, विपिन (1994), मनोविज्ञान की शोध विधियाँ, आगराः विनोद पुस्तक मन्दिर।

अग्रवाल, गोपाल कृष्ण (1976), समाज शास्त्र, आगराः साहित्य भवन।

गुप्ता, एम. एल., व शर्मा डी. डी. (1984), सामाजिक–नियंत्रण तथा सामाजिक–परिवर्तन, आगराः साहित्य भवन।

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies